काजी का न्याय

एक दिन तीन भाई न्याय पाने के लिए काजी के पास गए। उनका मामला बड़ा अनोखा था। वे काजी से बोले, "हमारे पिता की मृत्यु हो चुकी है। मरने से पहले हमारे पिता ने कहा था कि आधी जायदाद बड़े बेटे की होगी.

जायदाद का एकचौथाई हिस्सा दूसरे बेटे और जायदाद का छठवाँ हिस्सा तीसरे बेटे का होगा। इसलिए हम-ने उनकी मृत्यु के बाद जमीनजायदाद को उसी तरह बाँट लिया।-

लेकिन हम ग्यारह ऊँटों को नहीं बाँट पा रहे हैं। हम उन्हें किस प्रकार बाँटे?" उनकी बात सुनकर कुछ देर तो काजी सोच में पड़ गया लेकिन फिर बोला,

"यदि तुम्हें एतराज न हो तो मैं तुम्हारे पशु समूह में अपने ऊँट को भी शामिल करना चाहता हूँ।" वे बोले, "नहीं, हमें कोई एतराज नहीं है।" अब उनके पास बारह ऊँट हो गए थे।

तब बड़े बेटे को बारह ऊँटों के आधे छह ऊँट मिले, वहीं दूसरे बेटे को एकचौथाई के हिसाब से तीन ऊँट मिले और - सबसे छोटे बेटे के हिस्से छठवें भाग के हिसाब से दो ऊँट आए।

बटवारा करने के बाद काजी ने अपना ऊँट वापस ले लिया। तीनों भाई काजी के चतुराईपूर्ण न्याय से बहुत खुश थे।

विद्वत्ता की पहचान

शंकराचार्य के दो शिष्यों में विद्वता को लेकर काफी दिनों से व्यंग्य प्रहार हो रहे थे। दोनों शिष्य शंकराचार्य के पास पहुंचे और उन्होंने अपने गुरु से आग्रह किया वह यह निर्णय कर दें कि हम दोनों में से विद्वान अधिक कौन है।

शंकराचार्य जी दोनों शिष्यों के आग्रह पर सहमति देते हुए राजी हो गए।

तय समय पर दोनों शिष्यों में शास्त्रार्थ आरंभ हुआ। यह शास्त्रार्थ एक दिन दो दिन , एक हफ्ता दो हफ्ता , होते – होते पच्चीस दिन हो गए , किंतु दोनों में से कोई शिष्य पीछे हटने को राजी ना हुआ।

जबतक शास्त्रार्थ पुरा न होता तब तक शंकराचार्य फैसला नहीं कर सकते थे।

मगर शास्त्रार्थ में दोनों ही महारथी शिष्य कोई पीछे हटने को राजी ना था।

अचानक शंकराचार्य को आवश्यक कार्य से कहीं दूर दूसरे गुरुकुल में जाना पड़ा। उन्होंने दोनों शिष्यों के गले में ताजे पुष्पों की माला पहना दी , और दोनों शिष्यों से कहा मेरे अनुपस्थिति में यह पुष्पों की माला निर्णय करेगी , मैं यथाशीघ्र लौट कर आऊंगा।

शंकराचार्य जब लौट कर आए दोनों शिष्यों का शास्त्रार्थ पूरा हो गया था , अब निर्णय की बारी थी जो शंकराचार्य को करना था।

शंकराचार्य जी ने दोनों शिष्यों के गले मैं पहनाई गई माला को देखा और निर्णय सुना दिया।

जिसमें एक शिष्य दूसरे शिष्य से विद्वान साबित हुआ। इस निर्णय पर शंकराचार्य के अन्य शिष्य भी आश्चर्यचकित रह गए।

आखिर गुरु जी ने यह निर्णय कैसे लिया की एक शिष्य दूसरे से विद्वान है।

जबकि गुरु जी यहां उपस्थित ही नहीं थे।

संकोच बस एक शिष्य ने इसका कारण पूछा तब शंकराचार्य ने मुस्कुराते हुए निर्णय के कारण को बताया।

शंकराचार्य जी बोले – ‘ मैंने दोनों शिष्यों के गले में यह पुष्प की ताजा माला पहनायी थी जो एक शिष्य के गले में सूख गया है , जबकि विजय हुए शिष्य के गले में अभी तक ताजा है।

इसका कारण है जब कोई शास्त्रार्थ में पराजय का आभार महसूस करता है तो उसका गला क्रुद्ध या गर्म होता है।

जिसके कारण गले का तापमान बढ़ता है और पुष्प की माला सूखता है।

अब सभी शिष्यों को इस निर्णय का राज समझ आ गया था।

सभी ने अपने गुरु के निर्णय पर आश्चर्य जाहिर करते हुए उनकी प्रशंसा की और प्रणाम किया ऐसे गुरु के शिष्य होने पर उन्हें गर्व की अनुभूति हो रही थी।

नैतिक शिक्षा

इस कहानी के माध्यम से यह समझाया गया है कि हमेशा हमे अपने आप को अंदर से शांत रखना चाहिए। और बिना डरे या घबराये अपनी बात सामने रखनी चाहिए।

RAUSHAN DEEP
PGT (IT)
16/10/20XX